कारणशुद्धपर्याय : कार्यनुं वर्तमान मोजूद कारण

करुणासागर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीनो मुमुक्षु उपर अनेक अनेकविध परम उपकार छे. तेमांनो अेक परम उपकार छे कारणशुद्धपर्यायना सूक्ष्म रहस्यनो मर्म प्रकाश्यो ते. जोके कारणशुद्धपर्याय पर्याय होवा छतां ते न तो व्यवहारनयनो विषय छे के न ते स्वयं उत्पाद-व्ययुक्त छे. ते स्वयं त्रिकाळी ध्रुव द्रव्य-गुणनी माफक उत्पाद-व्यय रहित ध्रुव परिणति छे. तेथी आ गहन विषयने पूज्यश्रीअे घणी ज न्याय-युक्ति ने दृष्टांतो वडे समजाव्यो छे.

छअे द्रव्योना अनंता गुणोने बधाने पोतपोतानी कारणशुद्धपर्याय होय छे परंतु प्रयोजनवश जीवद्रव्यना अनंतगुणोनी कारणशुद्धपर्याय विशे अहीं विचारीअे—

शुद्ध, उत्पाद-व्यय रहित, सदृशरूप इत्यादि स्वभावरूप जेम गुण छे तेम ते ते गुणना तेवा ज स्वभावरूप तेनी कारणशुद्धपर्याय छे; तो पछी गुणमां ने कारणशुद्धपर्यायमां फेर शुं? के गुण छे ते त्रिकाळी सामर्थ्यनी प्रसिद्धि करे छे ज्यारे कारणशुद्धपर्याय छे ते वर्तमान प्रगटरूप–मोजूदरूप कारणनी प्रसिद्धि करे छे. गुणोनुं सामर्थ्य त्रिकाळ कारणरूप छे अने कारणशुद्धपर्याय वर्तमान कारणरूप छे. दृष्टांतथी विचारीअे—

रणमेदानमां ऊभेलो सैनिक अेम प्रसिद्ध करे छे के तेनामां शत्रु सामे लडवानुं सामर्थ्य छे; अेटले ज तो अे रणमेदानमां ऊभो छे, तोपण ज्यारे रणशींगु फुंकाय छे त्यारे ते शक्तिशाळी सैनिकमां शूरातन चडे छे, जोश ऊभराय छे. आ शूरातन ने जोश शत्रु उपर तूटी पडवानुं कारण बने छे. ते जुस्साभेर लडे छे तेनुं कारण वर्तमान शूरातन छे. शक्ति-सामर्थ्य तो भरपूर हता ज पण जुस्साभेर लडवानी प्रवृत्तिमां कारण छे तेनुं वर्तमान शूरातन.

तेवी रीते मिथ्यात्वनो नाश करवानी शक्ति-सामर्थ्य तो गुणोमां त्रिकाळ भरपूर भर्या पड्या छे पण कारणशुद्धपर्याय अे मिथ्यात्वना नाश माटे वर्तमान कारणरूप छे. कारणशुद्धपर्याय अे वर्तमानमां मोजूद हाजराहजूर कारणरूप छे अेवो विश्वास उपजतां कार्यपर्याय प्रगट थाय छे. प्रश्न अे थाय के कारणनो विश्वास अेटले शुं? दृष्टांतथी विचारीअे.

लींडीपिपर अने कोलसो. क्या अेवा विश्वासना जोरे लींडीपिपरने पथ्थर उपर लसोटीअे छीअे ने कोलसाने पथ्थर उपर लसोटता–घसता नथी? बन्नेना त्रिकाळ द्रव्यो पुद्गलरूप समान छे. बन्नेमां स्पर्श-रस-गंध-वर्णरूप त्रिकाळी गुण समान छे. बन्नेनी वर्तमान उत्पादरूप पर्यायो पण रस ने वर्ण सहित समान छे. बन्नेनी वर्तमान रस पर्यायमां तीखाशनो अभाव छे. निमित्त पथ्थर अकिंचित्कर छे. तो पछी कोलसाने लसोटता नथी ने लींडीपिपरने लसोटीअे छीअे अे पाछळ क्युं परिबळ काम करे छे? विश्वास! लींडीपिपरने घसवाथी 64 पहोरी तीखाश ने लीलो रंग प्रगट थवाना विश्वासना कारणे तेने घसवामां आवे छे. नरी आंखे लीलाश देखाती नथी ने जीभथी चाखता तीखाश अनुभवाती नथी. छतां लींडीपिपरने ज घसवानुं–लसोटवानुं साहस केम? त्रिकाळ सामर्थ्यरूप रंग ने रसगुण तो बन्ने पदार्थोमां समानपणे वर्ते ज छे छतां लींडीपिपरमां वर्तमानमां कोई अेवुं कारण मोजूद होवाना विश्वास वडे लसोटवामां आवता कार्य प्रगट थाय छे. त्रिकाळी कारण समान होवा छतां वर्तमानमां हाजराहजूर जे कारण छे तेना विश्वासने लीधे लींडीपीपरने लसोटवामां आवे छे.—अेनो अर्थ अे के त्रिकाळी कारण उपरांत कोई अेवुं वर्तमान कारण हाजराहजूर छे के जे अदृश्य ने अप्रगट होवा छतां तेना विश्वासे लींडीपीपरने लसोटीने कार्य प्रगट कराय छे.

तेवी रीते सम्यग्दर्शनना कार्य माटे कारणरूप कारणपरमात्मा त्रिकाळी शक्ति सामर्थ्यरूप मोजूद होवा उपरांत तेना वर्तमान कारणरूप जे हाजराहजूर छे तेनुं नाम छे कारणशुद्धपर्याय! अर्थात् मारा कार्य माटे त्रिकाळी द्रव्यस्वभाव उपरांत अेक कारणशुद्धपर्यायरूप कारण वर्तमानमां हाजराहजूर छे अेवो विश्वास उपजतां वीर्यनो वेग उछळे छे ने कार्य प्रगट थाय छे. जेम लींडीपिपरना वर्तमानना कारणरूप सामर्थ्यना विश्वासे कार्य साधी ल्ये छे तेम त्रिकाळी कारणपरमात्मा साथे अेकरूप अेवी कारणशुद्धपर्यायरूप वर्तमान कारण वडे कार्य साधी लेवाय छे. अदृश्य ने अप्रगट अेवा वर्तमान कारणना विश्वासथी कार्य प्रगट थई जाय छे.

आ गहन विषयने विशे हजु विचारीअे—

सोनगढनी बेंकना पोताना खातामां अेक करोड रूपिया जमा छे ने आपणे सम्मेदशिखरमां यात्राअे गया छीअे. त्यां साथे तो मांड पांच-पचीश हाजर होवा छतां आपणी पासे अेटीअेमनुं जे कार्ड छे तेना विश्वासे पांच लाख पण खर्ची शकीअे छीअे. अेटीअेम कार्डमां अेक रूपियो पण नथी. छतां अे कार्ड आपणा माटे प्रगट बेंक बेलेन्सरूप छे–चाहो तेटला वापरो! सोनगढ बेंकनुं आपणुं खातुं अेटले कायमी बेलेन्स ने अेटीअेम कार्ड अेटले प्रगट बेलेन्स! अेटीअेम कार्डमां प्रगटरूप अेक रूपियो पण न होवा छतां तेनामां प्रगटरूप सामर्थ्य केटलुं छे के कायमी बेंक बेलेन्स जेटलुं ज! खीस्सामां रूपिया न होय तोपण जेनी हूंफे जेना विश्वासे यात्रामां धन वापरीअे छीअे ते छे अेटीअेम कार्ड के जे वर्तमान प्रगटरूप बेंकनुं खातु छे.

तेवी ज रीते कारणपरमात्मा साथे रहेल कारणशुद्धपर्याय अव्यक्त छतां प्रगटरूप–हाजराहजूररूप वर्तमान कारणरूप छे—अेम कारणशुद्धपर्यायनी सूक्ष्मता समजातां मारा कार्यने माटे मारुं वर्तमान कारण हाजराहजूर छे अेवो विश्वास उपजतां वीर्य उछळीने कार्य परिणाम जाय छे अेम पूज्य गुरुदेवश्री समजाववा मागे छे.

वळी, कारणशुद्धपर्यायनो स्वीकार अेटले अनिवार्य छे के दृष्टिनो विषय खंडरूप न होय, अंशरूप न होय पण अखंड पूरो होय. त्रिकाळ द्रव्य ने गुणो साथे तेनी पर्याय होय तो दृष्टिनो विषय अखंड द्रव्य बने. वर्तमान पर्याय तो अखंडने विषय करनारी होवाथी वर्तमान पर्याय द्रव्यथी भिन्न रही जाय छे तेथी द्रव्य-गुणनी अखंडता माटे तेनी साथे जे उत्पाद-व्यय रहित अेकरूप ध्रुवरूप जे पर्याय छे ते कारणशुद्धपर्याय छे. प्रगट थती पर्यायना कारणरूप, द्रव्य-गुणनी साथे रहेल उत्पाद-व्यय रहित ध्रुवरूप प्रगट कारणरूप पर्याय ते कारणशुद्धपर्याय छे—आ त्रणेना अभेद अखंड द्रव्यने दृष्टिनो विषय बनावे त्यारे कार्य प्रगट थाय छे.

तेथी ज, कारणशुद्धपर्याय कदाचित् क्षयोपशम ज्ञानमां न समजाय तोपण तेनो विश्वास-स्वीकार होवो जरूरी छे; केम के जे ज्ञायकमां अहम् करवाथी कार्य प्रगटे छे ते ज्ञायक स्वयं ध्रुवद्रव्य तेना अनंता ध्रुवगुणो अने तेनी अनंती उत्पाद-व्यय रहित ध्रुवपर्यायोनुं अेकरूप छे.

अे रीते, मारा कार्यने माटे त्रिकाळी कारण तो सदाय मोजूद छे ज अने तेनी साथे वर्तमान कारणरूप कारणशुद्धपर्याय पण सदाय मोजूद छे—अेम प्रसन्नताथी द्रव्यस्वभावनो स्वीकार करीने तत्त्वनिर्णयनी सफलता साधीये अेवी भावना सह....